के उस को हल करेंगे, उस में आप नाकामयाब रहे, तो क्या मेरा यह सजेशन मानने के लिए आप तैयार हैं कि हिन्दुस्तान में जो सामाजिक संस्थाऐं है या धार्मिक संस्थाएं है . . .

MR. SPEAKER: He has given so much of informmation. Now, will he kindly sit down? He has given information and lecture to the Minister.

श्री प्रेम चन्द्र वर्मा : मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि क्या यह दुरुस्त है कि मिजो हिल और नागा हिल में कितने इस वक्त फौजी है और कब वहां के कमांडर ने यह कहा है कि अगर हमें इजाजत दी जाय और हमें हथियार दिये जायें तो हम इस समस्या को तीन महीने के अन्दर हल कर सकते हैं और एक भी नागा या मिजो चीन नहीं जा सकता, तो क्या सरकार उस पर कार्य करने के लिये तैयार है ? अगर नहीं तो क्यों ?

MR. SPEAKER: They do not take the permission of the government to go to China.

SHRI Y. B. CHAVAN: The hon. Member is completely misinformed about these matters.

SHRI D. N. PATODIA: The two vital conditions for cessation of operations were, firstly, that the Naga hostiles will not increase their fighting force and, secondly, that they will not allow and they will not send any of their people to foreign lands, Pakistan or China, for training. Now both these conditions have been violated. Since the basic and vital conditions of the cease-fire agreement have been violated, the cease-fire has become only a one-way traffic. In view of this situation, will the Government ensure that in future no such one-way cease-fire agreemet will be initiated?

SHRI Y. B. CHAVAN: I have said that these new developments have created a new situation and a new angle will have to be applied.

Communal Disturbances at Meerut (U.P)

+

*247. SHRI YASHPAL SINGH:
SHRI MOHAN SWARUP:
SHRI PREM CHAND VERMA:
SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE:
SHRI BENI SHANKER SHARMA:
SHRI T. D. RAMABADRAN:
SHRI MAYAVAN:
SHRI SHIV KUMAR SHASTRI:
SHRI MANIBHAI J. PATEL:
SHRI LATAFAT ALI KHAN:
SHRI BALRAJ MADHOK:
SHRI T. P. SHAH:
SHRI SARJOO PANDEY:
SHRI AMRIT NAHATA:
SHRI MAHARAJ SINGH BHARATI:

Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Sheikh Abdullah addresed a meeting of the Jamait-Ul-Ulema Hind at Meerut in January, 1968;

(b) whether it is also a fact that following his visit violent disturbances took place in Meerut;

(c) the number of persons killed and injured as a result of the disturbances; and

(d) whether any investigation has been made into the causes and course of the riots and if so, the result thereof?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN: (a) Yes, Sir.

(b) Incidents of communal violence took place from January 28, 1968 upto February 1, 1968.

(c) 16 persons were killed and 85 injured. Fifty policemen were also injured.

(d) The State Government are making inquiries into the matter.

MR. SPEAKER: Will you kindly answer question No. 257 also?

SHRI KANWAR LAL GUPTA: This question is about Meerut; that is different.

MR. SPEAKER: It is about the same communal trouble.

Communal Riots in Chikkammagalur

*257. SHRI MOHSIN: Will the Minister of HOME AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government are aware of the communal riots which took place at Chikkamagalur in Mysore State on the 6th and 8th of January, 1968;

(b) the estimated total loss of property belonging to minorities; and

(c) whether the incident has been entrusted to the Commission on Communal Disturbances recently appointed by Government?

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN): (a) Yes, Sir.

(b) The State Government are verifying the extent of the loss caused during the disturbances.

(c) No, Sir.

श्री यशपाल सिंह: क्या मैं सरकार से जान सकता हूं कि कोई शख्स जिस को 11 साल तक, 12 साल तक जेल में बन्द रखा और फिर उस के एकदम अपने विचारों का प्रचार करने के लिए भेज दिया जब कि उस ने अपने विचारों में तब्दीली का कोई एलान नहीं किया तो सरकार ने अपनी इस विवेकहीनता के लिए कहीं रिपेंट किया है ? जो कुछ बुद्धिहीनता सरकार से हुई है उस के लिए कहीं पब्लिक को बताया है कि हम से यह बेवकूफी हुई है, हम आइन्दा ऐसा नहीं करेंगे ?

श्री यशवंत राव चव्हाण : आनरेबल मेम्बर ने जरा कुछ पहले ही बुद्धिमत्ता इस्तेमाल की होती और समझने की कोशिश की होती तो उन्हें मालूम होता कि इन नेताओं को सरकार भेजती नहीं । यह तो उन को हक है जाने का । तो यह तो कम से कम बुद्धिमत्ता की बात आपने सोची होती ।

श्री यशपाल सिंह : मैं यह जानना चाहता हूं कि चौधरी चरण सिंह जो आप में से ही हैं आज तक भी गांधी टोपी लगाते हैं और आप के ही विचारों के हैं क्या उन से भी आप ने मशविरा किया था उस स्टेट के चीफ मिनिस्टर से कि हम इस तरह प्रचार करने के लिए शेख अब्दुल्ला को भेज रहे हैं ?

श्री यशवंत राव चव्हाण : आप गांधी टोपी नहीं पहनते लेकिन मैं यह तो आशा कर सकता हूं कि आप कुछ इतना तो समझ सकते हैं हम ने कहा कि हम नहीं भजते हैं उन को । भेजने की हमारी जिम्मेदारी नहीं है । वह एक फ्री सिटिजन हैं तो उन का हक है जाने आने का ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : वह अपने को यहां का नागरिक नहीं कहते ।

श्री यशवन्त राव चव्हाण : वह नहीं कहते लेकिन मैं तो कहता हूं कि वह हमारे नागरिक हैं . . .

श्री हुकम चन्द कछवाय : वह तो नहीं मानते ।

श्री यशवन्त राव चव्हाण : नहीं मानने से क्या होता है . . (व्यवधान) . . . . .

श्री प्रेम चन्द वर्मा : मैं मंत्री महोदय से जानना चाहूंगा हूं कि क्या यह दुरुस्त है कि मेरठ के झगड़े का कारण शेख अब्दुल्ला थे और क्या यह भी सही है कि सब से पहले जमैत-उल-उलेमा-हिन्द के वर्कर्स ने मुजाहरीनज पर लाठियों, कुल्हाड़े और लोहे की सलाखों से हमला किया और पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाए ? मैं जानना चाहता हूं कि इस सिलसिले में कितनी गिरफ्तारियां की गई और कितने चालान किए गए हैं? गिरफ्तारी के बाद जिन को छोड़ा गया उन में जमैत-उल-उलेमा के कितने लोग थे ।